भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्

वानिकी समाचार

वर्ष 11 अंक 09
सितम्बर 2019

अनुक्रमणिका

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष	01
विदेश दौरे	03
परामर्शी	04
प्रदर्शनी / मेला / किसान मेला	04
कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें	04
प्रशिक्षण कार्यक्रम	08
राजभाषा कार्यक्रम	10
प्रकृति कार्यक्रम	11
जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम	12
विविध	12
मानव संसाधन समाचार	12

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- परियोजना ''उत्तराखण्ड तथा हरियाणा से लार्वल परजीव्याभों, *एपेनटेलस* प्रजा. (हाइमेनोपटेरा : ब्राकोनिडी) की वर्गिकी एवं मेजबान रेंज पर अध्ययन'' के अंतर्गत दौरा किया गया तथा थानो रेंज, ऋषिकेश (देहरादून) में विभिन्न वानिकी वृक्षों : *टैक्टोना ग्रैण्डिस, मुर्राया कोइन्गी, पोपुलस* प्रजा. तथा *डलबर्जिया सिस्सु* से प्रयोगशाला पालन के लिए कीट लार्वा (*यूटैक्टोना मैचिएरेलिस, हिब्लिया प्यूरा,* जिओमैट्रिड सेमी–लूपर, *क्लोसटेरा फुलगुरिटा* तथा *क्लोसटेरा क्यूप्रेटा* व *एपेनटेलस* कोकुन पर *हिब्लिया प्यूरा*) के 15 नमूनों को एकत्रित किया गया जोकि *एपेनटेलस* प्रजा. के उद्भव के लिए जारी रहा। दस *एपेनटेलस* प्रजा. की छंटनी की गई। स्लाइड निर्माण तथा अभिज्ञान प्रगति में हैं।

- दौरा किया गया तथा चमोली, पौढ़ी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल तथा उत्तरकाशी जिलों से कीटों के 50 स्वीपिंग नमूने एकत्रित किए गए। जिनमें से 20 नमनों को छांटा गया। विभिन्न वानिकी वृक्षों : *कैसिया फिस्टुला, डलबर्जिया सिस्सु, होलोप्टेलिआ इण्टीग्रिफोलिआ, मोरिंगा ओलिफेरा, पोपुलस डेल्टोइड्स, रिसिनस कोम्मयूनिस* तथा *टैक्टोना ग्रैण्डिस* के दौरे के दौरान कीट अण्डों के पच्चीस नमूने एकत्रित किए गए। एकत्रित अण्ड नमूनों से दो अण्ड परजीव्याभों : *कैसिया फिस्टुला* पर मत्कुण के अण्डों से *यूडेरस* प्रजा. तथा *पोपुलस डेल्टोइड्स* पर दुर्गंध मत्कुण से *ट्राइस्सोल्कस* प्रजा. का उद्भव हुआ। छायाचित्रण तथा स्लाइड निर्माण प्रगति में हैं।

- परियोजना ''*क्लोरोफोरस एन्युलेरिस* फैब. (कोलिओप्टेरा : सिरामबिसिडि) – कटे व सूखे बाँस का एक मुख्य वेधक का महामारी विज्ञान तथा प्रबंधन'' के अंतर्गत *सी. एन्युलेरिस* का जीवविज्ञान अध्ययन प्रगति में है। वेधक द्वारा आक्रमण की घटनाओं एवं तीव्रता पर अवलोकन जारी है। कीटशाला में बाहरी पिंजरों में परिरक्षकों के उपयोग से वेधक के प्रबंधन पर प्रयोग परीक्षण स्थापित किया गया है। उपचार किए गए हरे एवं सूखे बाँस के आंकड़ों का अभिलेखन जारी है।

- परियोजना ''उत्तराखण्ड में विभिन्न वन प्रकारों / उप–प्रकारों से सम्बद्ध तितलियां'' के अंतर्गत मानसून ऋतु के अंतिम दिनों में उत्तराखण्ड के कुमाऊं क्षेत्र के बागेश्वर तथा पिथौरागढ़ जिलों (रानीखेत, सिउनी, सैलापानी, सेमाल खेत, गरुड़, कौसानी, धरमगढ़, मुनस्यारी, शामा वनों) में 9 दिवसीय क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया। 5 वन उप–प्रकारों नामतः 12/C1a बन ओक वन, 12/C2a खारसु ओक वन, 12/C2b पश्चिमी हिमालयी ऊपरी ओक / फर वन; 9/C1b ऊपरी / हिमालयी चीड़ पाइन वन; 12/1S1 आल्डर वन के 14 ट्रान्जैक्टों में नमूना एकत्रण किया गया। कुल 75 प्रजातियों के नमूने लिए गए तथा असामान्य तितलियों की प्रजाति के 18 प्रतिदर्शों को एकत्रित एवं परिरक्षित किया गया। इन स्थलों से अभिज्ञान के लिए विभिन्न वन उप–प्रकारों से वृक्षों एवं शाकों की 13 प्रजातियों के हर्बेरियम प्रतिदर्श भी एकत्रित किए गए। सर्वेक्षण के लिए गए बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ जिलों का भौगोलिक सूचना आधारित कृत्रिम रंग के सम्मिश्र मानचित्र भी नमूना एकत्रण के स्थलों का चयन करने के लिए सृजित किए गए। देवबन आरक्षित वन, चकराता वन प्रभाग में एक अन्य 3 दिवसीय सर्वेक्षण किया गया तथा 3 वन उप–प्रकारों (12/C1c नम देवदार वन, 12/C1d पश्चिमी मिश्रित शंकुधारी वन, 12/C1a बन ओक वन) के 4 ट्रान्जैक्टों में नमूना

एकत्रण किया गया। कुल 27 प्रजातियों के नमूने लिए गए तथा तितलियों के 5 प्रतिदर्शों को एकत्रित किया गया।

- परियोजना ''पश्चिम हिमालय ओक के नाशी–कीट तथा उनका नियंत्रण'' के अंतर्गत उत्तराखण्ड के देहरादून जिले के देवबन आरक्षित वन, चकराता वन प्रभाग में मानसून ऋतु के दौरान नवीन नाशीकीटों तथा काष्ठ वेधकों द्वारा क्षति की व्यापकता को दर्ज करने के लिए वृक्ष परिधि प्रस्तम्भ उंचाई, घनत्व तथा वनस्पितिक संरचना, घटनाएं व संक्रमण प्रतिशत को ज्ञात करने के लिए 15 क्वाड्रेट्स (10m X 10m) निर्धारित कर खारसु (*क्यू. सेमीकार्पिफोलिया*) तथा मोरू (*क्यू. फ्लोरीबण्डा*) वनों में एक तीन दिवसीय क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया। बाँज ओक वनों से शलभों की चार प्रजातियों के लार्वा भी एकत्रित किए गए जिसे बन ओक पर प्रयोगशाला में पाला गया। संक्रमित वृक्षों से वेधक द्वारा संक्रमित 5 खारसु ओक के कुन्दों को एकत्रित किया गया तथा प्रयोगों के लिए प्रयोगशाला में लाया गया। क्षेत्र से संक्रमित बाँजफल से बाँजफल का वेधक घुन, *सिटोफिलस ग्लानडियम* भी एकत्रित किया गया तथा संक्रमित ओक के कुन्दों से प्राथमिक ओक वेधक, *रोसेलिआ लेटेरिआ* के 13 वयस्कों को भी एकत्रित किया गया। विगत में देवबन आरक्षित वन, चकराता से लाए गए बन एवं खारसु ओक कुन्दों पर सिरामबिसिड तना वेधक *जायलोट्रेकस बेसिफ्यूलीजिनोसिस* के जीव विज्ञान पर प्रयोग प्रयोगशाला में जारी थे। 12 क्वाड्रेट स्थापित कर संक्रमित ओक वृक्षों के तनों में मृत्यता तथा संक्रमण की व्यापकता का अध्ययन करने के लिए डालखेत ग्राम, थानो रेन्ज, देहरादून में एक दिवसीय सर्वेक्षण भी किया गया, इसके अतिरिक्त जीवित वृक्षों से वेधक द्वारा संक्रमित कुन्दों को एकत्रित कर अग्रेतर जाँच के लिए प्रयोगशाला में लाया गया। ओक की नवीन शाखाओं को क्षति पहुंचाने वाले रस–चूषक पेण्टेटोमिड मत्कुणों की दो प्रजातियों के साथ–साथ संक्रमित बाँजफल से बन ओक बाँजफल का वेधक घुन, *एपोडेरस* प्रजा. को भी एकत्रित किया गया।

- परियोजना ''वन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट भण्डार का डिजीटलीकरण एवं संवर्धन, चरण – II (सूक्ष्म कीट)'' के अंतर्गत 450 छायाचित्रों के साथ–साथ 74 प्रकारों को डिजीटलीकृत किया गया। आंकड़ा–संचय में प्रजातियों के नामों को सत्यापित किया गया : दराज 53 से 61 में 2324 अन–अनुक्रमित प्रजातियों तथा दराज 62–82 में 3246 प्रजातियों को। दराज 1–34 को तीनों प्रारूपों JPEG, Tiff तथा reduced में छायाचित्रों को संग्रहित करने के लिए जाँचा गया।

- परियोजना ''पोपलर पर्ण निष्पत्रक, *क्लोसटेरा क्यूप्रेटा* बट के विरूद्ध पोपलर कृन्तकों की प्रतिरोधकता के लिए जाँच'' के अंतर्गत *क्लोसटेरा क्यूप्रेटा* के जीवविज्ञान के अध्ययन करने के लिए पोपलर के 33 कृन्तकों पर प्रयोग नो चाइस विधि से किए गए तथा सफलतापूर्वक अध्ययन को पूर्ण किया गया और पोपलर के 33 कृन्तकों पर प्रति से.मी. पर्ण भार मापन सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। निष्पत्रण द्वारा वृद्धि ह्रास ज्ञात करने के लिए प्रयोग किए गए।

- परियोजना ''कुछ चयनित परजीव्याभों की जैव–प्रभावकारिता पर विशेष महत्व के साथ उत्तर भारत के टैरोमैलिड परजीव्याभों (हाइमेनोप्टेरा : टैरोमैलिड) का विविधता अध्ययन'' के अंतर्गत टैरोमैलिड परजीव्याभों तथा उनके सम्भावित मेजबानों को एकत्रित करने के लिए हरियाणा राज्य के पिंजौर, करनाल, पानीपत, सोनीपत, जिंद, यमुनानगर तथा अंबाला का क्षेत्र दौरा किया गया। संक्रमित शाखाओं, पर्णों से लेकर अर्बुद संक्रमित पादप भागों से अनेकों नमूने एकत्रित किए गए तथा परजीव्याभों के एकत्रण के लिए स्वीप नैट विधि को भी प्रयुक्त किया गया। क्षेत्र से एकत्रित मेजबानों का पालन प्रयोगशाला में किया गया तथा परजीव्याभों को पृथक किया गया। अन्य सूक्ष्म–हाइमेनोप्टेरन परजीव्याभों के साथ–साथ टैरोमैलिड परजीव्याभों का उद्भव प्रेक्षित किया गया, एकत्रण, परिरक्षण तथा विधिवत अभिलेखन किया गया।

- परियोजना ''उत्तराखण्ड तथा उत्तर प्रदेश में निम्नीकृत भूमियों पर *मेलिना आर्बोरिया* तथा *ऐम्बिलिका ऑफिसिनेलिस* आधारित कृषि–वानिकी मॉडलों का विकास'' के अंतर्गत धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार), फतेहपुर पेलियो (सहारनपुर) तथा कोदापुर (प्रयागराज) में चयनित स्थल पर खाली भूमियों पर 4x5 मी. तथा 5x5 मी. के अंतरालों पर *जी. आर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* आधारित कृषि वानिकी माडलों पर कार्य प्रगति में है। चयनित स्थलों पर *जी. आर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* के वृद्धि आंकड़े संकलित किए गए। उपर्युक्त स्थलों से मृदा नमनों की भी जाँच की गई। यह प्रेक्षित किया गया धालुवाला मजबाटा (7.12 pH) तथा फतेहपुर पेलियो (7.36 pH) की मृदा के अन्य स्थलों की तुलना में कोदापुर (प्रयागराज) के स्थल की मृदा 8.30 के pH के साथ क्षारीय प्रवृत्ति की है। यह भी प्रेक्षित किया गया कि इन खाली खेतों में *जी. आर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* की दोनों प्रजातियां उत्कृष्ट रूप से कार्य कर रही हैं। उपर्युक्त स्थलों पर *जी. आर्बोरिया* तथा *ई. ऑफिसिनेलिस* की रोपणियों का अनुरक्षण एवं अनुश्रवण प्रगति में है।

- परियोजना ''उत्तराखण्ड में वर्षा पोषित परिस्थितियों में कृषकों की भूमियों पर कचनार (*बौहीनिया वेरीगेटा*), भीमल (*ग्रीविया ऑप्टिवा*) तथा कदंब (*एन्थोसेफेलस कदंबा*) आधारित कृषि–वानिकी मॉडलों का विकास'' के अंतर्गत धालुवाला मजबाटा (हरिद्वार) के दोनों स्थलों पर कचनार, भीमल तथा कदंब की वृद्धि संकलित की गई। परियोजना के अंतर्गत मृदा नमूनों की जाँच प्रगति में है। आद्यतः कदंब, भीमल एवं कचनार से उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है। उपर्युक्त स्थलों पर कचनार, भीमल तथा कदंब की रोपणियों का अनुरक्षण तथा अनुश्रवण किया गया।

- परियोजना ''उत्तराखण्ड में *ग्रीविआ ऑप्टिवा* (भीमल) के संवहनीय उपयोजन से आजीविका सुधार'' के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की वृक्ष–परिधियों तथा भीमल की शाखाओं के अन्य नमूनों में सेपोनिन का निर्धारण व प्रतिरूपण प्रगति में है। विभिन्न प्रविधियों से भीमल से रेशा निष्कर्षित किया गया तथा भीमल की शाखाओं को गाय के गोबर के विलयन में रखा गया। वाटर बाथ रिपेयर भी प्रगति में है।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर एलैन्थस एक्सेल्सा रोक्सब के आनुवंशिक सुधार में शामिल है। साधारणतः 'ट्री ऑफ हैवन' के नाम से जाने जाना वाला यह पर्णपाती वृक्ष सिमारोबेसी कुल से सम्बद्ध है। यह भारत तथा श्रीलंका की एक देशज वृक्ष प्रजाति है तथा प्रोटीन समृद्ध चारे का बहुत उत्तम स्रोत है। इस प्रजाति के काष्ठ की माँग रंग, मोम स्थिरता, निरंतर दहन तथा तीली बन पाने की क्षमता के कारण माचिस की तीलियों के निर्माण में उच्च है। *ए. एक्सेल्सा* के काष्ठ ट्रांसक्रिप्टोमों को अनुक्रमित किया गया तथा 48,493 ट्रांसक्रिप्टस का पूर्वानुमान किया गया। हरितलवक जीनोम की पुनः–संरचना की गई तथा 116 जीनों को कूटरचित कर 160804bp जीनोम को संकलित किया गया। संपूर्ण हरितलवक जीनोम के उपयोग द्वारा जातीवृत्तीय जाँच ने प्रकट किया कि सिट्रस सिनेनसिस के साथ वर्गबद्ध सिमआरूबेसिएइ के सदस्य रूटासिएइ कुल से संबंधित हैं। माइक्रोसैटेलाइट रिपीट्स की माइनिंग 5501 रिपीट्स की वुड ट्रांसक्रिप्टोम में उपस्थिति का पूर्वानुमान करती है। यह अध्ययन एलैन्थस वंश में प्रथम जीनोमिक संसाधन प्रस्तुत करता है तथा सृजित सूचना को विविधता आकलन, वृक्षसंख्या संरचना जाँच तथा इन प्रजातियों में काष्ठ गुणधर्म लक्षणों के लक्षित प्रजनन सुधार में उत्तरवर्ती अनुसंधान के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

- भारतवर्ष में सागौन वृक्ष आबादियों के अनुकूलनीय आनुवंशिक विविधता अध्ययन के प्रयास में, व.आ.वृ.प्र.सं. में सागौन के जीनोम को पूर्णतः अनुक्रमित कर जीन पैटर्न का वितरण तथा जीनोम में वितरित माइक्रोसैटेलाइट को समझने के प्रयास किए गए। अध्ययन ने प्रकट किया कि लगभग 11.18: के आवृत्ति तत्व जीनोम में हैं तथा प्रकाष्ठ उत्पत्ति में लगभग 600 जीन सम्मिलित हैं। सागौन के कुछ लोकप्रिय संततियों का माइक्रोसैटेलाइट पॉलीमार्फिजम के लिए जीनप्ररूपण किया गया तथा वृक्षसंख्या आनुवंशिक जाँच ने स्पष्ट रूप से 4.2 से 9.5 स्तर तक के स्थानीय सामान्य आनुवंशिक तत्वों की 0.6 से 0.9 तक के विषमयुग्मजता स्तर के साथ उपस्थिति दर्शित की। यह इंगित करता है कि सुदृढ़ आनुवंशिक विविधता वृक्ष आबादियों के अंतर्गत तथा मध्य में पायी जाती है तथा वृक्ष आबादी विशिष्ट आनुवंशिक तत्व संरक्षण में प्राथमिकता एवं प्रकाष्ठ निगरानी के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं।

- कृषकों के मध्य सागौन के गुणवत्ता रोपण सामग्री हेतु जागरूकता उत्तक संवर्धन से उन्नत पादपों के लिए अत्यधिक माँग का लेकर आती है। पारंपरिक वानस्पतिक संवर्धन रोपण सामग्री के किस्मानुसार शुद्ध संततियों के उत्पादन को संभव बनाता है लेकिन उत्तक संवर्धन विधि की तुलना में प्रजनकों का उत्पादन बहुत कम है। व.आ.वृ.प्र.सं. ने शीर्षस्थ कलिकाओं तथा ग्रंथि खण्डों से सागौन जीनप्ररूपों के वृहद स्तर नवांकुर उत्पादन के लिए सूक्ष्म प्रवर्धन प्रोटोकॉलों का विकास किया है। सागौन के चयनित स्टॉक को सूक्ष्म प्रवर्धन के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रवर्धित किया गया तथा कृषकों को आपूर्ति की गई। कृषकों के अतिरिक्त, व.आ.वृ.प्र.सं. ने उत्तक संवर्ध सागौन पादपों को महाराष्ट्र वन विभाग निगम तथा केरल वन विभाग को उपलब्ध कराया है। महाराष्ट्र में अष्टी, मारखण्डा व अल्लापल्ली प्रभागों में तथा केरल में रन्नी, पलोड, निलामबुर व कोन्नी में दस कृन्तकों के साथ प्रदर्शन खण्ड स्थापित किए गए हैं। यह परीक्षण स्थलों में स्थिर प्रदर्शन करने वालों तथा राज्य के भविष्य के रोपण कार्यक्रमों के लिए स्थल विशिष्ट कृन्तकों के लिए भी मूल्यांकन में सहायता करेंगे।

- राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, भारत सरकार के वित्तपोषण सहायता से 12 औषधीय रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के लिए बीज उत्पादन बागान स्थापित किए गए हैं। इन प्रजातियों में दशमूल की पाँच प्रजातियां नामतः एगेल मार्मेलोस, मेलिना आर्बोरिआ, ओरोजायलम इण्डिकम, प्रेमना इण्टिग्रिफोलिआ, स्टेरोस्पेरमम सुवावेओलेन्स; दो त्रिफला मायरोबेलैन्स नामतः टर्मिनेलिआ बेल्लीरिका, टर्मिनेला चेबुला के साथ–साथ सराका एसोका, टेरोकार्पस मर्सुपियम, स्टेरायकनोस नुक्स–वोमिका, स्टेरायकनोस पोटाटोरम तथा सैण्टालम एल्बम सम्मिलित थे। प्रजातियों की दीर्घकालीन संवहनीयता की आवश्यकता के लिए यह बागान आनुवंशिक बागानों के रूप में कार्य करेंगे तथा जननद्रव्य संरक्षण के साथ–साथ प्रजातियों के अग्रेतर प्रवर्धन के लिए गुणवत्ता बीजों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे। केरल में दो आयुर्वेदिक उद्योगों नामतः औषधि तथा अहेलिया के अंतर्गत दो बागान स्थापित किए जा चुके हैं।

विदेश दौरे

अधिकारी का नाम	संस्थान	दौरे का उद्देश्य	समयावधि	स्थान
डॉ. वी.पी.तिवारी एवं डॉ. बी.एन. दिवाकर	का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरु	15 वीं आई.यू.एफ.आर.ओ. विश्व कांग्रेस	29 सितम्बर से 5 अक्टूबर 2019	कुर्टिबा, ब्राजील

परामर्शी

टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कार्पोरेशन इंडिया लि.; हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि.; कर्नाटक स्टेट ऑफिशियल एथोरिटी; प.व.ज.प.मं., भारत सरकार, नई दिल्ली; कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता; एन.टी.पी.सी. लि., नोएडा; एन.एम.डी.सी.लि., हैदराबाद; सिंगरेनी कोल्लिएरिज कम्पनी लि., कोठागुडेम; छत्तीसगढ़ वन विभाग, रायपुर, वन एवं पर्यावरण विभाग, भुवनेश्वर तथा खैराहा यू.जी. कोल माइन ऑफ एस.ई.सी.एल., मध्य प्रदेश द्वारा प्रदत्त ग्यारह परामर्शी परियोजनाओं पर भा.वा.अ.शि.प. वर्तमान में कार्य कर रहा है।

प्रदर्शनी / मेला / किसान मेला

संस्थान	प्रतिभाग / आयोजित	समयावधि	स्थान
हि.व.अ.सं.,शिमला	कृषक / किसान मेला	7 से 9 सितम्बर 2019	लेह
शु.व.अ.सं., जोधपुर	सी.ए.जेड.आर.आई. मेला तथा कृषि नवाचार दिवस	16 सितम्बर 2019	जोधपुर
व.व.अ.सं., जोरहाट तथा व.उ.सं., राँची	बाँस हस्तशिल्पी सम्मेलन – 2019	18 तथा 19 सितम्बर 2019	दुमका, झारखण्ड

लेह में किसान मेला सह प्रदर्शनी

झारखण्ड में बाँस हस्तशिल्पी सम्मेलन – 2019

कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें

क्र. सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से यमुना नदी तथा इसकी सहायक नदियों के जीर्णोद्धार पर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	9,12,17 तथा 19 सितम्बर 2019	–

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

2.	अजैविक आघातों से प्रतिरोध के लिए आण्विक प्रजनन उपागम	3 सितम्बर 2019	व.आ.वृ.प्र.सं. के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी
3.	वन नाशी–कीट प्रबंधन में पादप किस्में	30 सितम्बर 2019	व.आ.वृ.प्र.सं. के वैज्ञानिक एवं कर्मचारी

अजैविक आघातों से प्रतिरोध के लिए आण्विक प्रजनन उपागम पर संगोष्ठी

वन नाशी–कीट प्रबंधन में पादप किस्मों पर संगोष्ठी

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरू

4.	कृष्णा नदी पर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट : महाराष्ट्र के हितधारकों की परामर्शी बैठक	18 सितम्बर 2019	सभी वन प्रभागों के उप वन संरक्षक/उप वनाधिकारी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, गैर सरकारी संगठन, कृषि विभाग के अधिकारी, कृषि आयुक्त, जिलाधिकारी, विश्वविद्यालयों तथा राजस्व विभाग से विशेषज्ञ

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

5.	बीज बागान : मध्य भारत में स्थिति एवं प्रबंधन	27 सितम्बर 2019	वैज्ञानिक एवं अन्य अनुसंधान कर्मचारी

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

6.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से ब्रह्मपुत्र नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	11 तथा 20 सितम्बर 2019	ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के लोग, वन विभाग, शोधार्थी

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

7.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से लूनी नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	17 से 26 सितम्बर 2019	वन अधिकारी, वैज्ञानिक, प्राध्यापक, अकादमीशियन, गैर सरकार संगठन तथा तकनीशियन इत्यादि
8.	अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक	23 सितम्बर 2019	वन अधिकारी, वैज्ञानिक, प्राध्यापक, अकादमीशियन, गैर सरकार संगठन तथा तकनीशियन इत्यादि

वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से लूनी नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट के निर्माण पर कार्यशाला

अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

9.	गुणवत्ता रोपण सामग्री के उत्पादन में वानिकी बीजों की भूमिका	27 सितम्बर 2019	हि.व.अ.सं. के वैज्ञानिक, तकनीकी कर्मचारी तथा शोधार्थी
10.	धर्मशाला में वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से व्यास नदी द्रोणी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	3 सितम्बर 2019	मण्डी वन वृत्त (वन संरक्षक एवं उप वन संरक्षक), मण्डी नगर समिति, नगर परिषद् (सरकाघाट तथा रेवलसार),पर्यटन, कृषि, उद्यान, लोक निर्माण विभाग, आपदा प्रबंधन, जे.आई.सी.ए. मण्डी तथा विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि

11.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से लूनी नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	17 से 26 सितम्बर 2019	वन अधिकारी, वैज्ञानिक, प्राध्यापक, अकादमीशियन, गैर सरकारी संगठन तथा तकनीशियन इत्यादि
12.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से सतलज नदी द्रोणी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	17 सितम्बर 2019	हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग, कृषि, कृषि विज्ञान केन्द्र (उद्यान), मृदा संरक्षण, आई.पी.एच., लोक निर्माण विभाग से प्रतिनिधि तथा पंचायत प्रधान

वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से सतलज नदी द्रोणी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट के निर्माण पर बैठक

वन उत्पादकता संस्थान, राँची

13.	निशे मॉडल तथा वानिकी में इसका अनुप्रयोग	30 सितम्बर 2019	वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र

वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद

14.	वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से गोदावरी, कृष्णा तथा नर्मदा नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण	18 सितम्बर 2019	महाराष्ट्र के हितधारक
15.	अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक	25 सितम्बर 2019	–

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	विषय	समयावधि	लाभार्थी
	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून		
1.	वानिकी, वन्यजीव तथा आपदा जोखिम न्यूनीकरण	16 से 20 सितम्बर 2019	उप वन संरक्षक/सहायक वन संरक्षक/वन रेंज अधिकारी स्तर के वन अधिकारी तथा अन्य हितधारक
2.	कूलिंग टावर टिम्बर	17 से 19 सितम्बर 2019	–
	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर		
3.	जनजातियों को उनकी आजीविका समर्थन के लिए समर्थित कर अपशिष्ट से कम्पोस्ट का विकास	16 सितम्बर 2019	विनायगा की मलयाली जनजातियां तथा मशानी महिलाएं, पोलाची, कोयम्बटूर जिले के अन्नामलाई बाघ आरक्षित क्षेत्र के अन्नामलाई रेंज के स्वयं सहायता समूह
4.	यंत्रीकरण विधियां तथा पादप रसायनिक जाँच	19 तथा 20 सितम्बर 2019	विभिन्न अकादमिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से छात्र
5.	जैवविविधता अधिनियम, 2002	25 तथा 27 सितम्बर 2019	तमिलनाडु तथा केरल के वन, कृषि, पशुपालन, मत्स्य, पंचायती राज इत्यादि के कर्मचारी

यंत्रीकरण विधियां तथा पादप रसायनिक जाँच पर प्रशिक्षण

जैवविविधता अधिनियम, 2002 पर प्रशिक्षण

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरू

6.	पादप रसायनों के निष्कर्षण, पृथक्करण तथा रसायनिक संरचना का अभिज्ञान	15 जुलाई – 6 सितम्बर 2019	सेण्टर फॉर बेसिक साईसेज, पण्डित रवि शंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़ से रसायनविज्ञान में एकीकृत M.Sc. के छात्र
7.	काष्ठ रक्षण	23 तथा 27 सितम्बर 2019	भा.नौ.पो. शिवाजी तथा एस.क्यू.ए.ई., मुम्बई से प्रतिभागी
8.	प्रकाष्ठ अभिज्ञान	23 तथा 27 सितम्बर 2019	राज्य वानिकी प्रशिक्षण समिति, कुण्डला के रेंज वन अधिकारी प्रशिक्षु

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

9.	औद्योगिक रोपणियों द्वारा कार्बन पृथक्करण	30 सितम्बर तथा 1 अक्टूबर 2019	मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कॉ. लि. के अधिकारी

औद्योगिक रोपणियों द्वारा कार्बन पृथक्करण पर प्रशिक्षण

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

10.	बाँस चारकोल निर्माण तथा ब्रिकेटिंग	10 से 13 सितम्बर 2019	असम के कार्बी एन्गलाँग जिले से प्रतिभागी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

11.	महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पादपों की कृषि : ग्रामीण आय के विविधीकरण तथा आवर्धन के लिए एक विकल्प	25 से 27 सितम्बर 2019	ग्राम पंचायत सदस्य, गैर सरकारी संगठन, शिक्षक, ईको टास्क फोर्स के कर्मचारी, बैंक कार्मिक इत्यादि

महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पादपों की कृषि : ग्रामीण आय के विविधीकरण तथा आवर्धन के लिए एक विकल्प पर प्रशिक्षण

राजभाषा कार्यक्रम

- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 11 से 25 सितम्बर 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने 16 सितम्बर 2019 को हिन्दी दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए तथा कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया।
- का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरू ने 14 से 28 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ 16 सितम्बर 2019 तथा समापन 30 सितम्बर 2019 को किया गया। इस अवधि के दौरान संस्थान के कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर ने 14 से 30 सितम्बर 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया।
- शु.व.अ.सं., जोधपुर ने 13 से 19 सितम्बर 2019 तक हिन्दी सप्ताह आयोजित किया जिसमें प्रतियोगिताएं जैसे टिप्पण–लेखन, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, हिन्दी टंकण (सामान्य एवं सारांश द्वारा), हिन्दी भाषा सामान्य ज्ञान, हिन्दी वर्ग पहेली तथा स्वरचित काव्यपाठ के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी में विचार अभिव्यक्ति आयोजित किए गए।
- हि.व.अ.सं., शिमला ने 1 से 14 सितम्बर 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया।
- व.उ.सं., राँची ने 1 से 14 सितम्बर 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा निबंध लेखन, काव्य पाठ तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आदि आयोजित किए गए।
- व.जै.सं., हैदराबाद ने 14 से 20 सितम्बर 2019 तक हिन्दी सप्ताह आयोजित किया।

भा.वा.अ.शि.प., मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा

प्रकृति कार्यक्रम

- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, सालावाला, देहरादून के 28 छात्रों के विभिन्न समूहों ने अपने शिक्षकों के नेतृत्व में 6 सितम्बर 2019 को व.अ.सं., देहरादून को दौरा किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय सं. 3 दिल्ली कैण्ट, रिंग रोड, नारायणा के 54 छात्रों के समूह तथा केन्द्रीय विद्यालय, पीतमपुरा, दिल्ली के 41 छात्रों के समूह ने अपने शिक्षकों के नेतृत्व में 12 तथा 13 सितम्बर 2019 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय, केशवपुरम, नई दिल्ली के 50 छात्रों के समूह ने अपने शिक्षकों के नेतृत्व में 30 सितम्बर 2019 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत देश के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के 100 शिक्षकों के समूह ने श्री एम. के. मलिक, उप–प्रधानाचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, ओ.एन.जी.सी., देहरादून के साथ 19 सितम्बर 2019 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा आयोजित ''प्रकृति'' कार्यक्रम में 25 विद्यालयों ने प्रतिभाग किया। कोयम्बटूर, उडुमलपेट, पोल्लाची, तिरूपुर, पोडानुर के विद्यालयों ने ''प्रकृति'' कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में 1309 विद्यालय के छात्रों तथा 308 महाविद्यालय के छात्रों ने प्रतिभाग किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत शु.व.अ.सं., जोधपुर ने 27 सितम्बर 2019 को व्याख्यान एवं प्रदर्शनी आयोजित की। केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा 6 से 12वीं तक के 211 छात्रों सहित विद्यालय के कर्मचारियों ने प्रदर्शनी का भ्रमण किया।
- ''प्रकृति : वैज्ञानिक–छात्र मिलन'' कार्यक्रम के अंतर्गत हि.व.अ.सं., शिमला ने वानिकी एवं पर्यावरण के बारे में जागरूकता प्रसार के उद्देश्य से केन्द्रीय विद्यालय, लेह (लद्दाख) तथा जवाहर नवोदय विद्यालय, लेह (लद्दाख) के कक्षा 10वीं, 10+1 तथा 10+2 के छात्रों के लिए 7 सितम्बर 2019 को केन्द्रीय विद्यालय, लेह (लद्दाख) तथा जवाहर नवोदय विद्यालय, लेह (लद्दाख) में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।
- ''प्रकृति : वैज्ञानिक–छात्र मिलन'' कार्यक्रम के अंतर्गत हि.व.अ.सं., शिमला ने वानिकी एवं पर्यावरण के बारे में जागरूकता प्रसार के उद्देश्य से जवाहर नवोदय विद्यालय, रियासी (जम्मू एवं कश्मीर) के विज्ञान वर्ग के 10+1 तथा 10+2 के छात्रों के लिए 23 सितम्बर 2019 को जवाहर नवोदय विद्यालय, रियासी (जम्मू एवं कश्मीर) में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत व.उ.सं., राँची ने जवाहर नवोदय विद्यालय, पलमाउ तथा देओघर में 6 और 17 सितम्बर 2019 को 'पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रम' आयोजित किया। 675 छात्रों एवं शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत व.जै.सं., हैदराबाद ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन, तिरूमालागिरी तथा शिवरामपल्ली के 90 छात्रों तथा 9 शिक्षकों के समूह के लिए 12 तथा 13 सितम्बर 2019 को पर्यावरण, वन क्रियाकलापों तथा जैवविविधता पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।
- ''प्रकृति'' कार्यक्रम के अंतर्गत व.जै.सं., हैदराबाद ने जिला परिषद् माध्यमिक विद्यालय, दुल्लापल्ली, हैदराबाद के 40 छात्रों तथा 2 शिक्षकों के समूह के लिए 26 सितम्बर 2019 को पर्यावरण, वन क्रियाकलापों तथा जैवविविधता पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

व.आ.वृ.प्र.सं. में छात्रों ने पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम में प्रतिभाग किया

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, तिरूमलघेरी के छात्र

जवाहर नवोदय विद्यालय, लेह (लद्दाख) के छात्र

जागरूकता एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां यथा पौधशाला प्रबंधन, कृषि, प्रवर्धन, बाँस का प्रवर्धन एवं मूल्य वर्धन, बाँस परिरक्षण तकनीकियां, जैव प्रौद्योगिकी एवं ऊतक संवर्धन, लाख कृषि, वानस्पतिक बाग, और्चिडेरियम, कृमि खाद इत्यादि पर 6 सितम्बर 2019 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्बी एन्गलाँग से 11 प्रशिक्षुओं तथा एरणयक, गुवाहाटी के सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

वन उत्पादकता संस्थान, राँची ने लालगुटवा परिसर में रोपित विभिन्न औषधीय पादपों, मीलिया डुबिया तथा पोपलर पर ज्ञान प्रदान करने के लिए 24 सितम्बर 2019 को प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। बी.ए.यू., राँची के 20 B.Sc. (वानिकी संकाय) के छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

विविध

संस्थान	विशेष दिन/विषयवस्तु	समयावधि
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर	अंतरराष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस 2019	16 सितम्बर 2019
	विश्व बाँस दिवस	18 सितम्बर 2019

अंतरराष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस 2019

विश्व बाँस दिवस के अवसर पर तमिलनाडु वन विभाग के वनरक्षक बाँस को रोपित करते हुए

मानव संसाधन समाचार

नियुक्त

अधिकारी का नाम	तिथि
श्रीमती ऋचा मिश्रा, भा.व.से., वन संरक्षक, व.अ.सं., देहरादून	03.09.2019

पदोन्नति

अधिकारी का नाम	तिथि
श्री नरेन्द्र कु. शारदा, निजी सचिव, शु.व.अ.सं.,जोधपुर	11.09.2019
श्री एस. सेन शर्मा, अनुभाग अधिकारी, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	26.09.2019

संरक्षक:
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून

संपादक मंडल:
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), मानद सम्पादक
श्री रमाकान्त मिश्र, मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग),सदस्य

प्रत्याख्यान
- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- यहाँ प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।